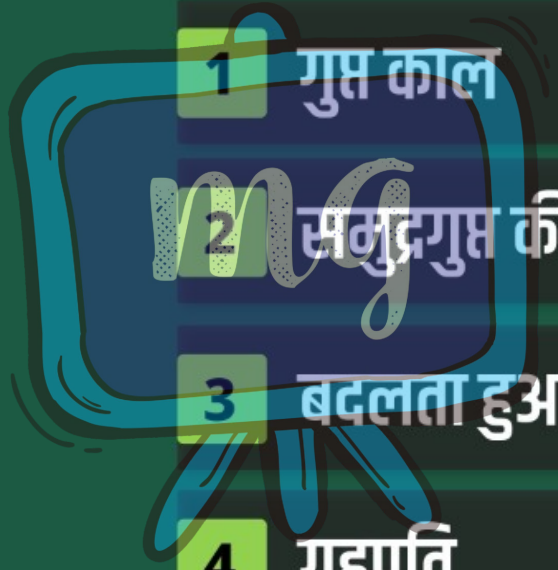

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
AIDON
BATCH
CLASS 12th | HISTORY
राजा, किसान और नगर
Chapter-2 | Part-6 आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ (लगभग 600 ई.पू. से 600 ई.)

आज क्या पढेंगे ?



1. गुप्त काल
2. समुद्रगुप्त की प्रशस्ति
3. बदलता हुआ देहात
4. गहपति

दैविक राजा

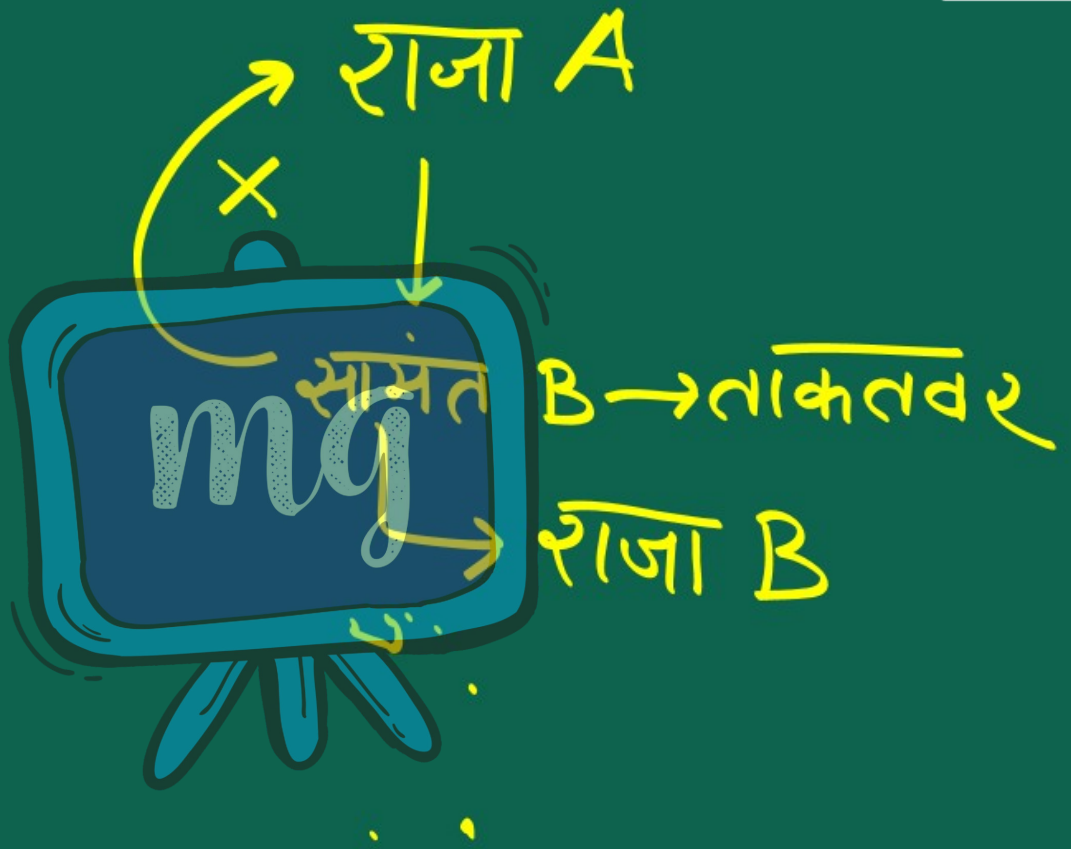
चीनी

स्वर्गपुत्र



प्रतिष्ठा ↑

उ. कुषाण


राजा A
x
सामंत B → ताकतवर
राजा B

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



गुप्त काल :-

चौथी शताब्दी ई. में गुप्त साम्राज्य सहित कई बड़े साम्राज्यों के साक्ष्य मिलते हैं।

इस समय कई साम्राज्य सामन्तों पर निर्भर थे। तथा अपना निर्वाह स्थानीय संसाधनों से करते थे जिससे भूमि पर नियंत्रण भी शामिल था। वे शासकों का आदर भी करते थे और उनकी सैनिक सहायता भी करते थे। जो सामंत शक्तिशाली होते थे वे राजा भी बन जाते थे और जो राजा दुर्बल होते थे, वे बड़े शासकों के अधीन हो जाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चन्द्रगुप्त - I ✓

- गुप्त संवत ✓
- महाराजाधिराज



- गुप्त वंश भी इसके संस्थापक श्री गुप्त जो कि एक बड़े सामंत थे, से प्रारम्भ होकर चंद्रगुप्त, समुद्रगुप्त जैसे प्रतापी शासकों तक पहुंचा।
- श्री गुप्त (240 – 280 ई.) संस्थापक
- घटोत्कच (280 – 319 ई. तक)
- चन्द्रगुप्त प्रथम (319 – 350 ई. तक)
- समुद्रगुप्त (350 – 375 ई. तक)
- भारत का नेपोलियन भी कहते हैं। चंद्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त, स्कन्दगुप्त, आदि प्रतापी शासक है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



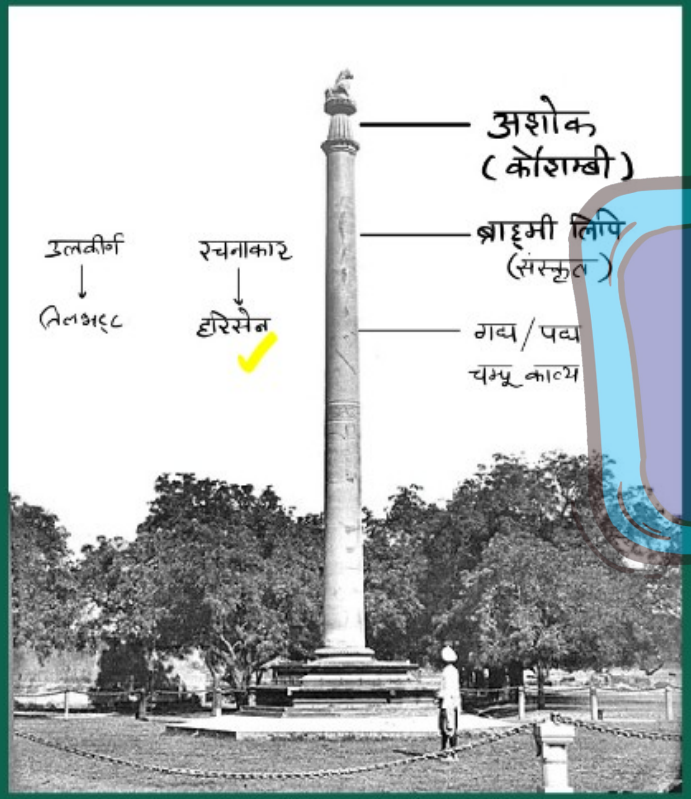
- चांदी सिक्के
- मद्दरोली - लौह स्तंभ
- कालिदास, धनवन्तरि वाराहमीर

चन्द्रगुप्त द्वितीय (375 – 415 ई.) – विक्रमादित्य भी कहा गया। चीनी यात्री फाह्यान (405 – 411) तक इसके दरबार में रहा।

कुमार गुप्त प्रथम (415 – 455 ई.) – यह भी एक प्रतापी शासक था जिसने अश्वमेघ यज्ञ भी करवाया।

स्कन्दगुप्त (455 – 467 ई.) – गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का अपने गवर्नर चक्रपालित द्वारा पुर्ननिर्माण करवाया।

अंतिम सफल शासक था।



- गुप्त शासकों का इतिहास साहित्य, सिक्कों और अभिलेखों की सहायता से लिखा गया है। साथ ही कवियों द्वारा अपने राज्य या स्वामी की प्रशंसा में लिखी गई प्रशस्तियां भी उपयोगी रही है।
- इतिहासकार इन रचनाओं के आधार पर इतिहास खोजने का प्रयास करते हैं लेकिन ये रचनाऐं तथ्यात्मक विवरण की अपेक्षा काव्यात्मक ग्रंथ ही है। उदाहरण स्वरूप देखें तो इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख के नाम से प्रसिद्ध प्रयाग प्रशस्ति की रचना हरिषेण ने की जो संभवतः सर्वाधिक शक्तिशाली सम्राट समुद्रगुप्त के राजकवि थे, ने संस्कृत में की थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

समुद्रगुप्त की प्रशस्ति



प्रयाग प्रशस्ति का अंश

धरती पर उनका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं था। अनेक गुणों और शुभकार्यों से सम्पन्न उन्होंने अपने पैर के तलवे से अन्य राजाओं के यश को मिटा दिया है। वे परमात्मा पुरूष हैं। साधु (भले) की समृद्धि और असाधु (बुरे) के विनाश के कारण हैं। वे अज्ञेय हैं। उनके कोमल हृदय को भक्ति और विनय से ही वश में किया जा सकता है। वे करूणा से भरे हुए हैं। वे अनेक सहस्त्र गायों के दाता है। उनके मस्तिष्क की दीक्षा दीन-दुखियों, विरहणियों और पीड़ितों के उद्धार के लिए की गयी है। वे मानवता के लिए दिव्यमान उदारता की प्रतिमूर्ति हैं। वे देवताओं में कुबेर (धन देव), वरूण (समुद्र देव), इन्द्र (वर्षा के देवता) और यम (मृत्यु देव) के तुल्य हैं।

देवतुल्य

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

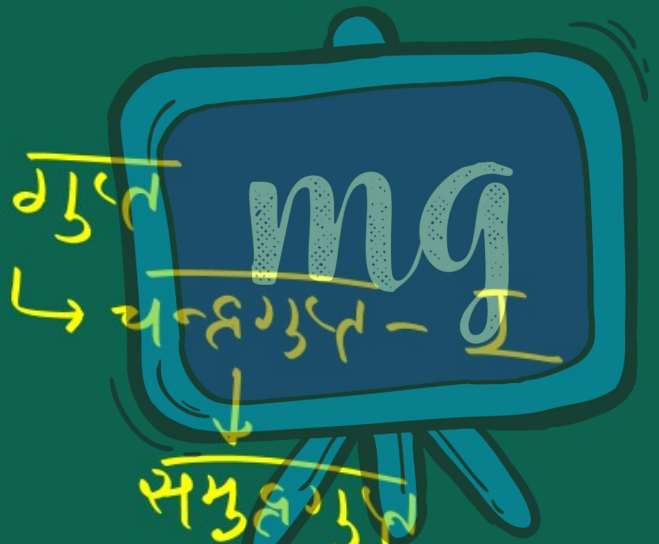
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. दैविक राजा का सिद्धान्त
Q. गुप्त वंश
Q. प्रयाग प्रशस्ति



मौर्य

↳ चन्द्रगुप्त मौर्य



गुप्त

↳ चन्द्रगुप्त - I

↓

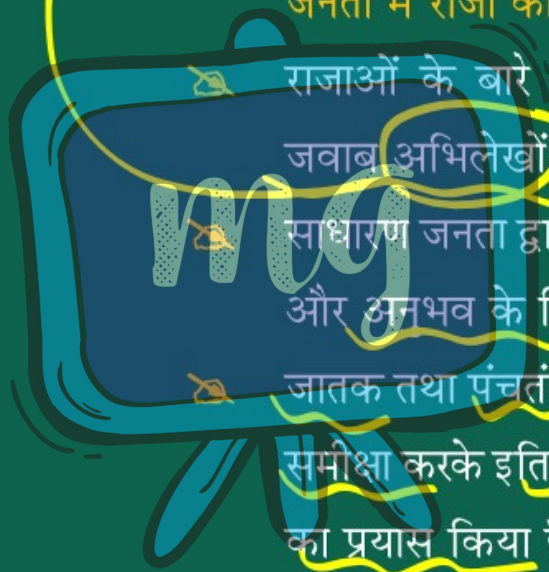
समुद्रगुप्त

↓

चन्द्रगुप्त - II

राजा → प्रशंसा

बदलता हुआ देहात



जनता में राजा की छवि :-

- राजाओं के बारे में प्रजा क्या सोचती थी इसका जवाब अभिलेखों द्वारा नहीं मिल सकता।
- साधारण जनता द्वारा राजाओं के बारे में अपने विचार और अनुभव के विवरण कम ही छोड़े गये हैं।
- जातक तथा पंचतंत्र जैसे ग्रंथों में वर्णित कथाओं की समीक्षा करके इतिहासकारों ने इसका निराकरण करने का प्रयास किया है।
- इनमें से अनेक कथाओं के स्त्रोत मौखिक किस्से कहानियां हैं। जिन्हें बाद में लिपिबद्ध किया गया होगा।

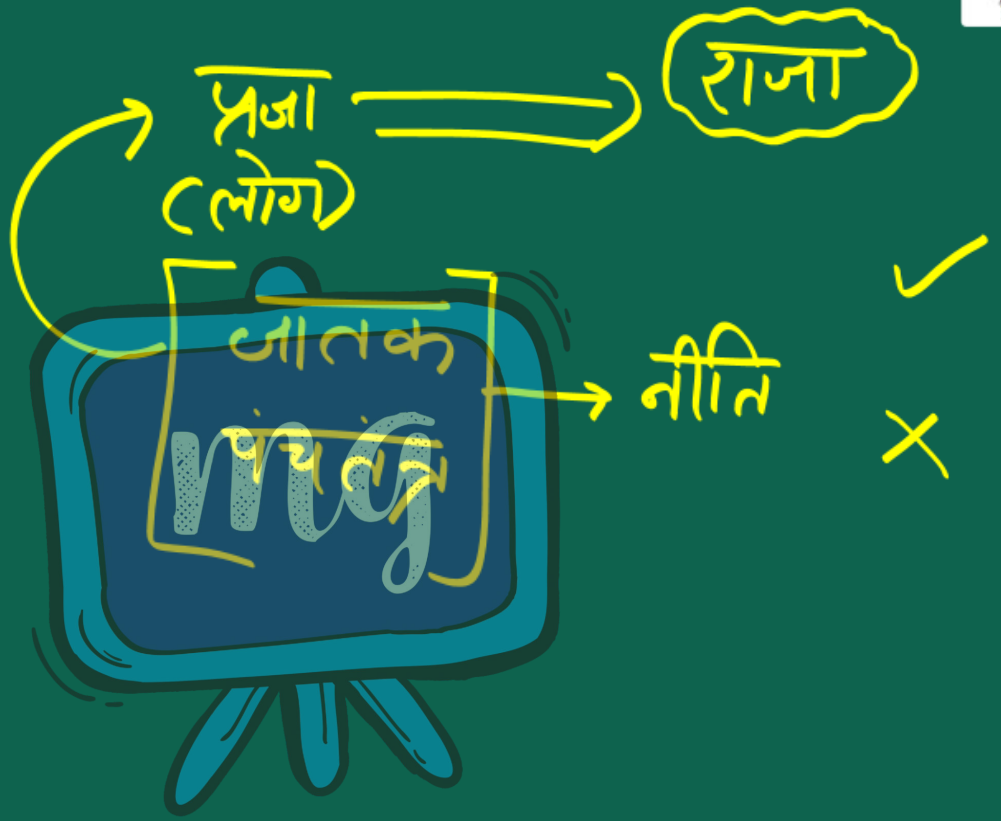
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



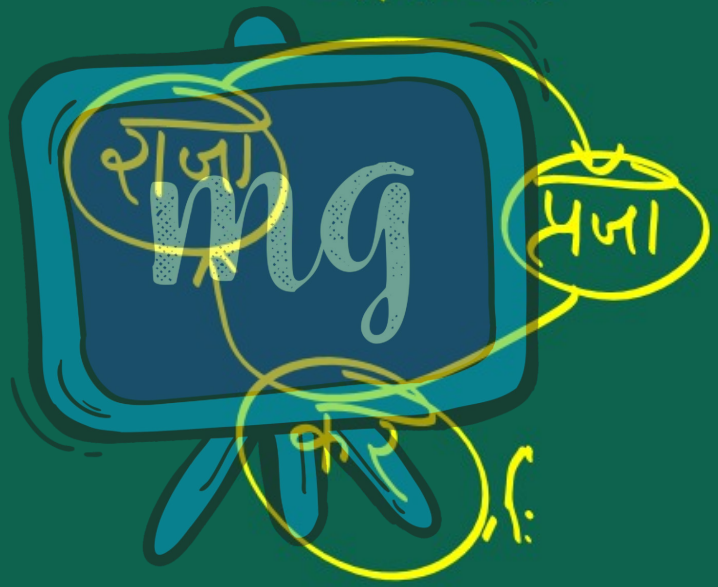
- जातक कथाएं पहली सहस्त्राब्दि ई. के मध्य में पालि भाषा में लिखी गयी है।

जातक कथाऐं महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाऐं हैं। ये विश्व की प्राचीनतम लिखित कथाऐं हैं। इसमें लगभग 600 कहानियां संग्रह की गयी है। जिनमें मनोरंजन के माध्यम से नीति और धर्म को समझाने का प्रयास किया गया है। ये बौद्ध ग्रंथ त्रिपिटिक का भाग है।


प्रजा
(लोग)
राजा
जातक
नीति

{ गंगातिन्दु }

जातक





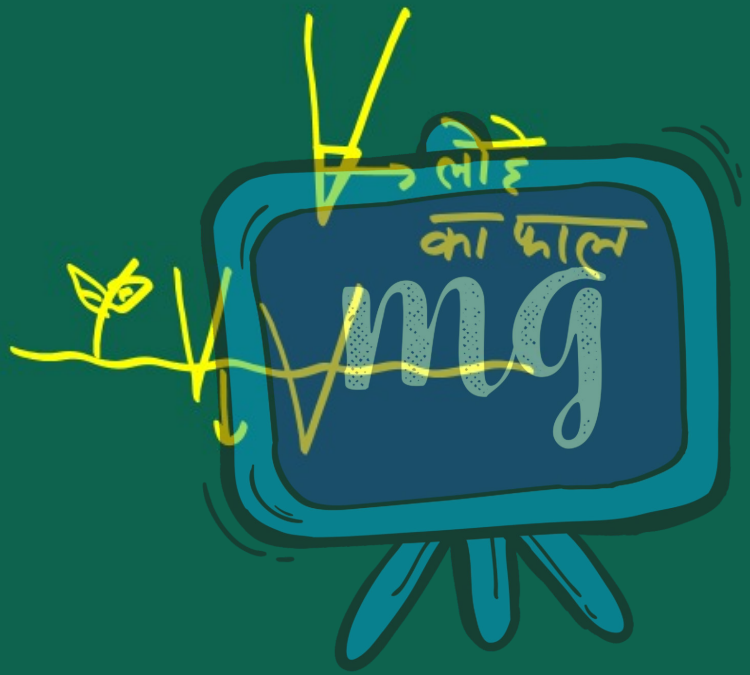
इससे पता चलता है कि राजा और प्रजा विशेषकर ग्रामीण के बीच संबंध तनावपूर्ण रहते थे। क्योंकि शासक अपने राजकोष को भरने के लिए बड़े-बड़े कर मांग करते थे जिससे किसान त्रस्त रहते थे। इस बीच करों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए किसानों ने उपज बढ़ाने के और उपाय ढूंढने शुरू किये।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

9. गंदतिन्दु की कथा के माध्यम से हम राजा और प्रजा के किन रिश्तों पर प्रकाश डाल सकते हैं?





→ कुदाली

कुदाल

=

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



उपज बढ़ाने के तरीके :-

- उपज बढ़ाने का एक तरीका हल का प्रचलन था। जो 600 ई. पू. से ही गंगा तथा कावेरी की घाटियों के उर्वर कछारी क्षेत्र में फैल गया था।
- जिन क्षेत्रों में भारी वर्षा होती थी वहां लोहे के फाल वाले हलों के माध्यम से उर्वर भूमि की जुताई की जाने लगी।
- गंगा की घाटी के क्षेत्रों में धान की रोपाई की उपज में भारी वृद्धि होने लगी। हालांकि किसानों के इसके लिए कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

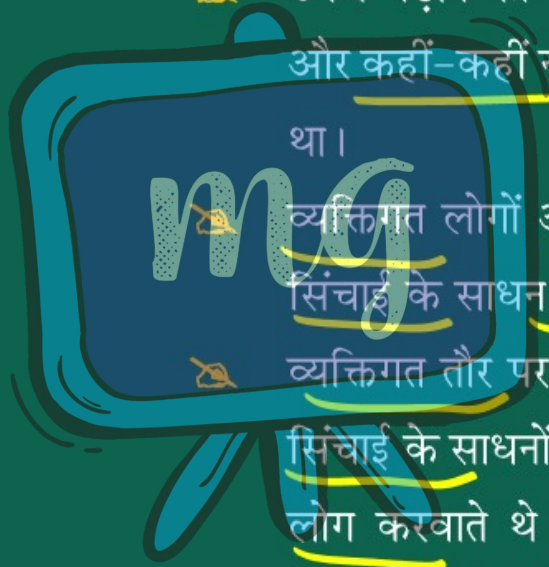
यद्यपि लोहे के फाल वाले हल से फसलों की उपज बढ़ने लगी थी लेकिन ऐसे हलों का उपयोग कुछ ही हिस्सों में सीमित था। पंजाब और राजस्थान जैसे अर्द्धशुष्क जमीन वाले क्षेत्रों में लोहे के फाल वाले हल का प्रयोग 20वीं सदी से शुरू हुआ।

उपमहाद्वीप के पूर्वोत्तर और मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोग खेती के लिए कुदाल का प्रयोग करते थे जो ऐसे इलाकों के लिए कहीं अधिक उपयोगी था।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

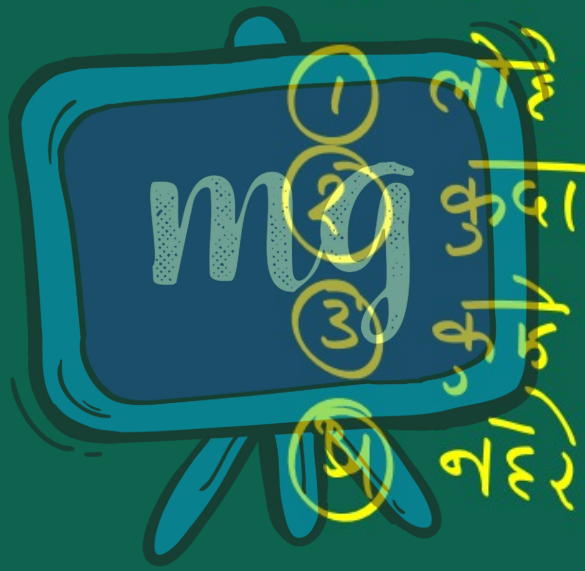


- उपज बढ़ाने का एक और तरीका कुओं, तालाबों और कहीं-कहीं नहरों के माध्यम से सिंचाई करना था।
- व्यक्तिगत लोगों और कृषक समुदायों ने मिलकर सिंचाई के साधन निर्मित किये।
- व्यक्तिगत तौर पर तालाबों, कुओं और नहरों जैसे सिंचाई के साधनों का निर्माण राजा या प्रभावशाली लोग करवाते थे। जिन्होंने अपने इन कामों का उल्लेख अभिलेखों में भी करवाया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. प्राचीन काल में उपज बढ़ाने के कौन से तरीके थे ?



① लोहे के फाल
② लकड़ी के फाल
③ लकड़ी के हल
④ गहरी जुताई

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ग्रामीण समाज में विभिन्नताएँ:-

खेती की नई तकनीकों से यद्यपि उपज तो बढ़ी लेकिन इसके लाभ समान नहीं थे।

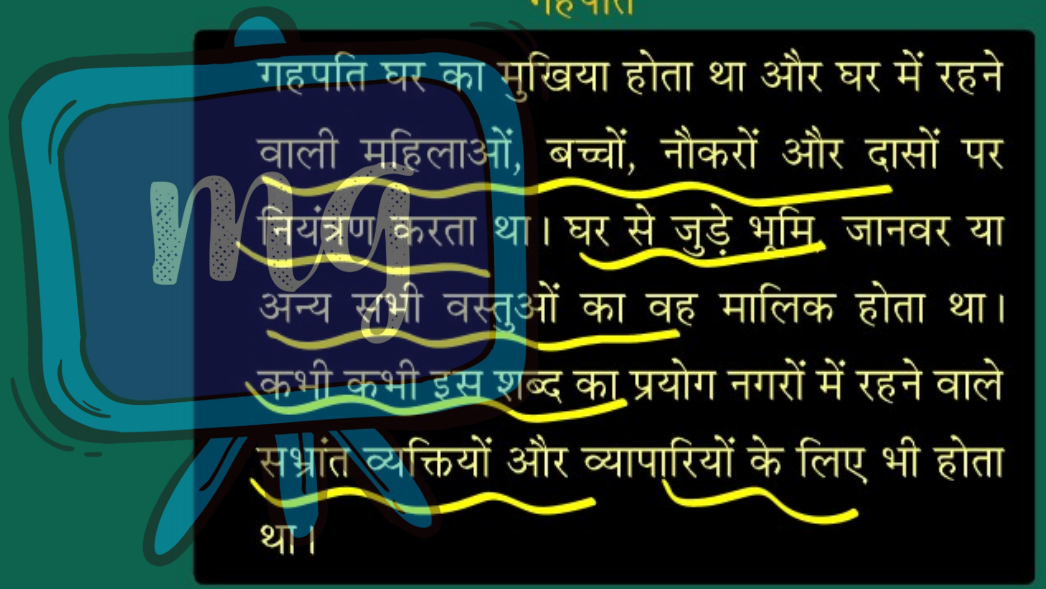
खेती से जुड़े लोगों में उत्तरोत्तर भेद बढ़ता जा रहा था। कहानियों में विशेषकर बौद्ध कथाओं में, बड़े बड़े जमींदारों, छोटे किसानों तथा भूमिहीन खेतीहर श्रमिकों का उल्लेख मिलता है।

पालि भाषा में गहपति शब्द का प्रयोग छोटे किसानों तथा जमींदारों के लिए किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गहपति



गहपति घर का मुखिया होता था और घर में रहने वाली महिलाओं, बच्चों, नौकरों और दासों पर नियंत्रण करता था। घर से जुड़े भूमि, जानवर या अन्य सभी वस्तुओं का वह मालिक होता था। कभी कभी इस शब्द का प्रयोग नगरों में रहने वाले सभ्रांत व्यक्तियों और व्यापारियों के लिए भी होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

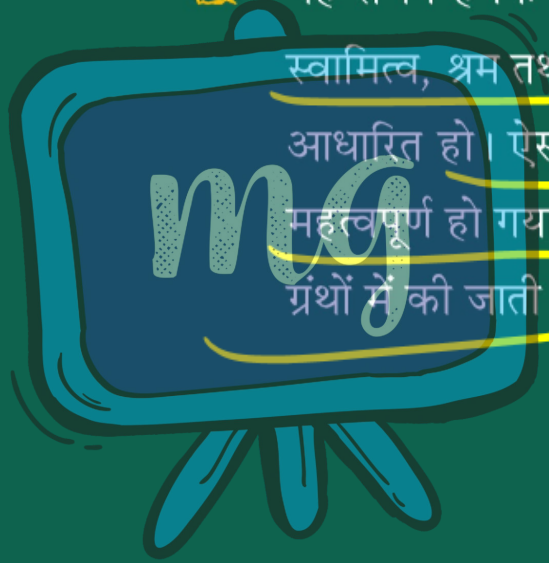
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- बड़े-बड़े जमींदार और ग्राम प्रधान शक्तिशाली होते थे।
- ये प्राय: किसानों पर नियंत्रण रखते थे।
- ग्राम प्रधान का पद प्राय: वंशानुगत होता था।
- आरम्भिक तमिल संगम साहित्य में भी गांवों में रहने वाले विभिन्न वर्गों के लोगों का उल्लेख है।

जैसे –
- वेल्लालर या बड़े जमींदार
- उल्वर या हलवाहा
- अणिमई या दास

यह संभव है कि वर्गों की यह विभिन्नता भूमि के स्वामित्व, श्रम तथा नई प्रौद्योगिकी के उपयोग पर आधारित हो। ऐसी स्थिति में भूमि का स्वामित्व महत्वपूर्ण हो गया था। जिसकी चर्चा प्राय: विधि ग्रंथों में की जाती थी।



Q क्या प्राचीन काल के दौरान ग्रामीण समाज में भिन्नताओं के साक्ष्य मिलते? उदाहरण सहित समझाइये

